अपनी दुनिया
इंदौर, मंगलवार ४ मई 1999

25372
Prakash Chawla

दैनिक अपनी दुनिया

आयुर्वेद ने जगाई कैंसर के निदान की आशा

कैंसर एक असाध्य और लगभग लाइलाज रोग है, इसके नाम से ही मरीज और उसके परिजन तमाम आशंकाओं, कुशंकाओं के अथाह सागर में डूबने-उतरने लगते हैं. जैसा कि माना जाता है और सिद्ध भी है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) में तमाम असाध्यरोगों का अचूक इलाज समाहित है, बस जरूरत इन्हें ढूंढ निकालने की और ऐसा ही एक विलक्षण प्रयास किया है जयपुर के एक वैद्य डॉ. नंदलाल तिवारी ने. वैद्यजी ने २०-२५ वर्षों की अनवरत साधना के बाद विभिन्न जड़ी-बूटियों के मिश्रण से कैंसर की अत्यंत प्रभावशाली और नायाब दवा इजाद की है. इसके सेवन से अनेक रोगी मौत के दरवाजे से जीवन के आंगन में लौट आए हैं. उन्होंने आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से तैयार अपनी दवा का नाम 'कर्कटोल' रखा है और राजस्थान सरकार से इसके निर्माण की बाकायदा अनुमतिच भी ली है.

आज पूरी दुनिया में कैंसर जैसे घातक असाध्य रोग पर पूर्णतः विजय प्राप्त करने के लिए कारगर औषधि की खोज की जा रही है, परंतु दुर्भाग्यवश अभी तक किसी वैज्ञानिक को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चला है, जिससे इस जानलेवा रोग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सके.

डॉ. तिवारी ने १९६० से १९६२ तक और फिर १९६३ से १९७१ तक दार्जिलिंग के चाय बागानों में और जंगली वनस्पतियों पर गहन अध्ययन किया. जंगलों में औषधियों का भंडार है और आदिवासी लोग इस परंपरा का लाभ लेते रहे हैं. डॉ. तिवारी ने व्यवस्थित ढंग से नया आयाम दिया. उन्होंने काफी प्रयासों के बाद आठ वनस्पतियों का एक शुद्ध मिश्रण तैयार किया. इन औषधियों का केंद्र सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त ग्रंथों में उल्लेख है. परंतु यह प्रमाणित नहीं है कि इनका उपयोग कैंसर जैसे घातक रोग के लिए हो सकता है. होने इनका परीक्षण कर एक यौगिक तैयार किया और पहली बार एक जीभ के कैंसर के मरीज पर इसका परीक्षण किया. परीक्षण काफी हद तक सफल रहा और फिर जन कल्याण का सिलसिला चल पड़ा. पिछले १५ वर्षों के दौरान भारत ही नहीं बल्कि अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी और कनाड़ा आदि देशों से उनके पास मरीज आने लगे. डॉ. तिवारी अब नियमित रूप से लंदन और अन्य बड़े विदेशी शहरों में जाकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं. लंदन की एक सामाजिक संस्था ने यहां आकर उनके काम पर फिल्म बनाई है और लंदन के एक स्थानीय टी.वी. ने उन पर आधे घंटे का एक इंटरव्यू कार्यक्रम प्रसारित किया, लेकिन डॉ. तिवारी ने अपना पेटेंट विदेशों में नहीं दिया है वे इसे अपने देश को ही सौंपना चाहते हैं. डॉ. तिवारी के पास ९० प्रतिशत मरीज ऐसे आते हैं, जिन्हें हर तरह के इलाज के बाद अस्पतालों से यह कहकर लौटा दिया जाता है कि अब सिर्फ भगवान का नाम लो. डॉ. तिवारी का यह दावा कभी नहीं रहा कि इनकी दवा से सभी मरीज ठीक हो जाएंगे, लेकिन आखिरी स्टेज के ४०-५० प्रतिशत मरीजों को पूर्ण आराम मिला है. आधे मरीज ऐसे भी हैं जिन्हें आशानुरूप आराम नहीं मिला, लेकिन जहां ५ से १० प्रतिशत रोगियों को उन्नत इलाज के बाद लाभ हो रहा है वहां यह आंकड़ा काफी मायने रखता है. डॉ. तिवारी का मानना है कि यदि उसके लक्षणों के आधार पर इलाज प्रारंभ कर दिया जाए तो इसकी आखिरी स्टेज की तकलीफों से बचा जा सकता है.

अब डॉ. तिवारी एक हर्बल मिश्रण तैयार करने की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं. जिसको जीभ पर लगाते ही यह पता चल जाएगा कि रोगी को कैंसर नहीं. यदि उनका यह अनुसंधान स[फल] रहा तो कैंसर चिकित्सा के क्षेत्र [में] एक मील का पत्थर साबित ह[ोगा]. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सं[स्थान] नई दिल्ली ने डॉ. तिवारी की दवा क[र्कटोल] का चूहों पर एक्यूट और सबए[क्यूट] परीक्षण करने के बाद निष्कर्ष दि[या कि] यह दवा शरीर पर किसी प्रका[र का] विपरीत प्रभाव नहीं डालती है. मुख्[य] कैंसर की अन्य दवाएं अपने वि[षाक्त] प्रभाव से कैंसर की विषाक्त कोशि[काओं] को नष्ट करती हैं, परंतु यह दवा श[रीर पर] किसी तरह का विषाक्त प्रभाव [डाले] बिना कैंसर निदान में उपयोगी है.

लंदन की लाइन मार्टिन एंड रेड लेबोरेटरी ने डॉ. तिवारी द्वारा [तैयार] यौगिक का परीक्षण कर इसे नि[रापद] करार दिया है. दवा विश्लेषक के आर. ब्वायनेट ने दवा के सैम्पल काफी बारीक विश्लेषण के [बाद] संतोषजनक करार देते हुए अपनी रि[पोर्ट] में कहा कि इसका मानव शरीर पर [कोई] दुष्परिणाम नहीं होगा.

पवन २/१३ मालवीय न[गर]
जयपुर, फोन-५२१३८५

> यह अनुसंधान सफल रहा तो कैंसर चिकित्सा के क्षेत्र में यह एक मील का पत्थर साबित होगा. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ने डॉ. तिवारी की दवा कर्कटोल का चूहों पर एक्यूट और सबएक्यूट परीक्षण करने के बाद निष्कर्ष दिया कि यह दवा शरीर पर किसी प्रकार की विपरीत प्रभाव नहीं डालती है.

26454